International Journal of Literacy and Education

E-ISSN: 2789-1615
P-ISSN: 2789-1607
www.educationjournal.info
Impact Factor: 5.69
IJLE 2023; 3(1): 212-216
Received: 09-03-2023
Accepted: 17-04-2023

पूजा यादव
शोधार्थी, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

डॉ. पी. एन. मिश्रा
प्रोफेसर, शासकीय शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
पूजा यादव
शोधार्थी, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

रीवा जिले मे विज्ञान विषय के शासकीय एवं अशासकीय उच्च माध्यमिक शिक्षकों की शैक्षिक अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन

पूजा यादव, डॉ. पी. एन. मिश्रा

सारांश:
शिक्षा के स्वरूप में उच्च माध्यमिक शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान है, उच्च माध्यमिक शिक्षा समुचित शिक्षा प्रणाली की रीढ़ की हड्डी के समान है। माध्यमिक शिक्षा राष्ट्र के तकनीकी तथा सांस्कृतिक जीवन पर विशेष प्रभाव डालती है। यह शिक्षा उन लोगों को शिक्षित करती है, जो देश के सामाजिक निर्माण तथा आर्थिक विकास में प्रभावशाली हो सके उच्च माध्यमिक शिक्षा व्यक्ति को उच्च शिक्षा तक जोड़ने की एक कड़ी है। उच्च माध्यमिक स्तर के शिक्षकों का प्रत्येक वर्ष प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया जाना चाहिए, उच्च माध्यमिक शिक्षकों के अंतर्गत नई तकनीकों का संचार किया जाना चाहिए, जिससे उनकी अध्यापन प्रक्रिया ज्यादा से ज्यादा प्रभावी हो सके, आधुनिक परिवेश में नई-नई तकनीकी की माध्यम से ही छात्रों के अंतर्गत नए ज्ञान का सृजन किया जा सकता है। नए-नए ज्ञान और तकनीकी के माध्यम से ही शैक्षिक परिवर्तन संभव है। एक शिक्षक के लिए सर्वप्रथम महत्वपूर्ण आवश्यक है, कि अपने विद्यार्थियों से भलीभांति परिचित हो एवं छात्रों के साथ उचित सामंजस्य स्थापित करें। जिससे विभिन्न गतिविधियों में विद्यार्थियों की समानता सुनिश्चित की जा सके। शैक्षिक व्यवस्था का समुचित निष्पादन करने के लिए शिक्षक तथा छात्र के अंदर गुरु और शिष्य का संबंध स्थापित होना अत्यंत आवश्यक है, यह संबंध विद्यार्थियों के अंतर्गत अनुशासन और संस्कार की भावना उत्पन्न करते हैं। अनुशासन और अच्छे संस्कार ही एक विद्यार्थी के सर्वश्रेष्ठ गुण है, विद्यार्थी के अंतर्गत इन सभी गुणों का संचार करना एक शिक्षक का परम कर्तव्य है।

कूटशब्द : रीवा जिला, उच्च माध्यमिक, विज्ञान विषय, शैक्षिक अभिवृत्ति

प्रस्तावना
शिक्षक एक ऐसा प्राणी है, जिसके चारों तरफ संपूर्ण शिक्षण प्रक्रिया चक्कर लगाती है। भारतीय समाज में शिक्षक का स्थान सर्वश्रेष्ठ है। शिक्षक वह कड़ी है, जो बौद्धिक परंपरा एवं तकनीकी कौशल को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुंचाने का कार्य करता है, विद्यार्थियों को अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाने का कार्य शिक्षक करता है। शैक्षणिक क्रियाकलाप की सफलता मुख्य रूप से शिक्षक के व्यवहार, अभिवृत्ति, योग्यता एवं उसके कार्य पर निर्भर करती है। शिक्षक की अभिवृत्ति जैसी होगी उसी प्रकार से विद्यार्थियों का विकास भी होगा, क्योंकि विद्यार्थियों पर सबसे ज्यादा प्रभाव शिक्षक की आवृत्ति का पड़ता है। अक्सर विद्यार्थी शिक्षक के कारण ही किसी भी विषय के प्रति रुचि विकसित कर लेते हैं, क्योंकि उन्हें शिक्षकों में सकारात्मक गुण देखने को मिलता है, यही सकारात्मक गुण उस विषय के साथ जुड़ जाता है, जिसे शिक्षक पढ़ाता है, जो उस विषय के प्रति रुचि के रूप में अभिव्यक्त होता है।

यदि एक विशिष्ट अभिवृत्ति को प्रदर्शित करने के लिए किसी व्यक्ति की प्रशंसा की जाती है, तो यह संभावना बढ़ जाती है, कि वह आगे चलकर उस अभिवृत्ति को विकसित करेगा (प्रतिभा गुप्ता एवं उदय सिंह 2022)।

कोई भी राष्ट्र अपने शिक्षक वर्ग पर संपूर्ण रूप से निर्भर करता है, क्योंकि शिक्षक समाज के नागरिकों की गुणवत्ता को बढ़ाते हैं और नागरिक राष्ट्र का निर्माण करते हैं। इसलिए शिक्षक को राष्ट्र का निर्माता समझा जाता है। शिक्षण व्यवस्था को एक आदर्श व्यवसाय की संज्ञा दी गई हैं। शिक्षक वह धुरी है, जिसके चारों ओर राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली घूमती है। प्राचीन भारत में शिक्षक को अग्रणी स्थान प्राप्त था और शिक्षक अपने कार्य को जीवन का प्रमुख ध्येय समझते थे। परंतु आज शिक्षण कार्य एक व्यवसाय मात्र रह गया है, और जीविकोपार्जन इसका मूल उद्देश्य है (डॉ मीनाक्षी भटनागर श्रीमती किरण परगांई 2018)।

आज विज्ञान का शिक्षण हमारे विद्यालयों की शिक्षा क्रम का एक अनिवार्य अंग बन चुका है। कहना चाहिए कि आज विज्ञान शिक्षण की सुविधा एवं व्यवस्था से रहित किसी विद्यालय शिक्षा क्रम की कल्पना करना कठिन है। विज्ञान का हमारी राष्ट्रीय प्रगति से गहरा संबंध है। किसी भी राष्ट्र का इतिहास बताता है, कि उसकी समृद्धि में विज्ञान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। राष्ट्र की सुरक्षा में भी विज्ञान का बहुत बड़ा हाथ है। आज के मनुष्य का जीवन विज्ञान से ही इतना उन्नत हो रहा है विज्ञान सार्वभौम होता है, तथा उसका लाभ भी सार्वभौम होता है। विज्ञान हमें असीमित विकास की संभावना दिखाता है। मनुष्य में ज्ञान की जिज्ञासा जगाता है, प्रकृति के रहस्यों को विज्ञान ही मनुष्य के सामने खोलता है I मनुष्य को प्रकृति के विराट स्वरूप का दर्शन विज्ञान ही करवा सकता है, मनुष्य की आदिमकाल से आज के आधुनिक काल तक हुई प्रगति विज्ञान से ही संभव हुई है। आज जबकि मनुष्य विज्ञान को अपने जीवन का एक अभिन्न अंग बना चुका है, तो उसके बिना मनुष्य के जीवन की कल्पना करना असंभव है। विज्ञान का महत्व निश्चित ही आने वाले दिनों में और बढ़ेगा, बच्चों को माता-पिता अभिभावक तथा अध्यापक द्वारा विज्ञान के प्रति प्रोत्साहित करना चाहिए। विद्यार्थियों की विज्ञान के प्रति अभिवृत्ति जानने एवं उनकी शंकाओं के समाधान के लिए ही शोधकर्ता ने यह विषय चुना है (मंजुला तिवारी, परमानंद बरोदिया, नीलू सिंह एवं अनुपम चौधरी (2016))।

उच्च माध्यमिक स्तर पर विज्ञान शिक्षण के उद्देश्य

शिक्षक को पढ़ाने से पहले उस विषय के उद्देश्यों को निर्धारित करना होता है, उद्देश्यो के आधार पर छात्रों को ज्ञान दिया जाता है। इस विषय में एक विद्वान का कथन है, कि "उद्देश्य के ज्ञान के बिना शिक्षक उस नाविक के समान है, जिसे अपने लक्ष्य का ज्ञान नही है, तथा उसके शिक्षार्थी उस पतवारहीन नौका के समान है, जो समुद्र की लहरों के थपेड़े खाकर तट की ओर बहती है।" उद्देश्यों को निर्धारित करते समय शिक्षक को निम्न बातों को ध्यान रखना आवश्यक होता है-

1. उद्देश्य ऐसे हो जो छात्रो की आवश्यकताओ की पूर्ति करे।
2. उद्देश्यो को सिखाने के लिए शिक्षक को अपने व्यवहार मे परिवर्तन करना चाहिए जिससे छात्रो मे रूचि बनी रही।
3. उद्देश्य शिक्षा के लक्ष्य की प्राप्ति के लिए होना चाहिये।
4. विज्ञान शिक्षण का उद्देश्य है, कि विद्यार्थियो को समझाया जाए कि विज्ञान का संबंध केवल पुस्तक तथा प्रयोगशाला तक ही सीमित नही है, बल्कि उसका सम्बंध दैनिक जीवन में भी है। विज्ञान शिक्षण तभी सफल हो सकता है, जब विज्ञान शिक्षण दैनिक जीवन की क्रियाओ पर आधारित हो।
5. आधुनिक युग विज्ञान का युग है, वास्तव में विज्ञान में आधुनिक संस्कृति को बहुत प्रभावित किया है। इसलिए आधुनिक संस्कृति को समझने के लिए विज्ञान का अध्ययन आवश्यक है।
6. विज्ञान शिक्षण का उद्देश्य छात्रो में मानसिक अनुशासन उत्पन्न करना है। जिससे छात्रो की मानसिक प्रक्रिया ठीक प्रकार से कार्य कर सके। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए छात्रो के निरीक्षण तथा प्रयोगात्मक शक्ति का विकास किया जाता है (www.shikshavichar.com/2019/05)।

अभिवृत्ति को प्रभावित करने वाले कारक

मानव व्यवहार में मनुष्य की अभिवृत्ति विभिन्न पक्षों से प्रभावित होती हैं। अभिवृत्ति व्यक्ति के अनुभव के आधार पर विकसित होती हैं। अभिवृत्ति को प्रभावित करने में व्यक्तियों के अनुभवों का विशेष योगदान होता है। व्यक्तियों के अनुभव के आधार पर ही अभिवृत्ति का निर्माण होता है, जिसकी वजह से व्यक्तियों की अभिवृत्ति प्रभावित होती है। पिछले कुछ विगत वर्षों में हुए अध्ययनों के आधार पर ज्ञात हुआ है, कि परिवार, विद्यालय एवं महाविद्यालय परिवेश आदि का प्रभाव शिक्षकों के व्यवहारों पर भी पड़ता है। जिससे शिक्षकों की अभिवृत्ति भी प्रभावित होती है (अरमान अली 2020)।

शैक्षिक अभिवृत्ति

अभिवृत्ति एक विश्वास होता है, जो समाज के हर मनुष्य का अपने परिवेश और अन्य व्यक्तियों के प्रति होता है। उदाहरण स्वरूप शिक्षकों एवं विद्यार्थियों की शिक्षा के प्रति विशिष्ट अभिवृत्ति होती है। उसका विकास शिक्षा में किस तरह से होता है, और वह किस तरह से अपने व्यवहारों को प्रदर्शित करते हैं। शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के व्यवहारों में किया गया परिवर्तन दृष्टिगत होते हैं, शिक्षा को अभिव्यक्ति से संबंधित करते हैं, और शैक्षिक अभिवृत्ति में शिक्षकों एवं विद्यार्थियों का शिक्षा के प्रति अभिव्यक्ति का विकास होता है । एक योग्य शिक्षक तभी बनाया जा सकता है, जब उसकी शिक्षण कार्य के प्रति रुचि हो, शिक्षकों को विषयों के ज्ञान के साथ-साथ विद्यार्थियों के संपूर्ण विकास पर भी कार्य करना चाहिए, क्योंकि विद्यार्थियों का अलग अलग तरह का व्यवहार उनके शिक्षकों के व्यवहारों पर आधारित होता है । शिक्षकों को अपने विषय के क्षेत्र में ज्ञान के साथ-साथ एक कुशल मनोवैज्ञानिक भी होना चाहिए, क्योंकि कभी-कभी विद्यार्थियों की मनोदशा अस्थिर हो जाती है (अरमान अली 2020)।

शिक्षण अभिवृत्ति

किसी भी मनुष्य के किसी घटना वस्तु के प्रति उसका दृष्टिकोण उस व्यक्ति के विचार आदि का आशय अभिवृत्ति से है यह भी दृष्टिकोण है, उसके विचार व्यक्ति वस्तुओं व घटनाओं के प्रति उनके व्यवहारों को एक सही दिशा देता है। एक मनोभाव ही ऐसा है, जो मनुष्य को किसी भी व्यक्ति वस्तु व पदार्थ के विपक्ष में व पक्ष में करती है । अभिवृत्ति एक ऐसी है, जो व्यक्तियों विशेष परिस्थितियों अथवा वस्तुओं के प्रति संगति पूर्ण व्यवहार करने के लिए हमेशा तत्पर रहने की दशा है। अध्यापन के प्रति अध्यापक की धनात्मक अथवा ऋणात्मक सोच मनोभाव ही शिक्षण अभिवृत्ति कहलाते हैं । प्रस्तुत अध्ययन में अभिवृत्ति का तात्पर्य शिक्षक का अपने शिक्षण व्यवसाय के प्रति झुकाव तत्परता एवं समर्पण से है, जिसका सीधा प्रभाव उसके कक्षागत शिक्षण से है (प्रोफेसर रीना जैन एवं प्रीति जैन 2015)।

साहित्य की समीक्षा

प्रोफेसर रीना जैन एवं प्रीति जैन (2015), ने विद्यालय शिक्षकों एवं शिक्षक प्रशिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति व्यावसायिक प्रतिबद्धता एवं व्यावसायिक मूल्यों का अध्ययन किया, शोधार्थी ने निर्धारित लक्ष्य की ओर अग्रसर होने के उद्देश्य से तथा शोध प्रकृति को दृष्टिगत रखते हुए वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया, और पाया कि सर्वाधिक विद्यालय शिक्षकों (54.00%) की शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति आवश्यक स्तर से अधिक पाई गई, इसमें 48.67% विद्यालय शिक्षक उच्च अभिवृत्ति के पाए गए, तथा 5.33% विद्यालय शिक्षकों की अभिवृत्ति अति उच्च स्तर की पाई गई, शिक्षण व्यवसाय के प्रति 34.67% शिक्षकों की अभिव्यक्ति औसत स्तर की पाई गई, तथा 11.34% शिक्षकों की शिक्षण व्यवस्था के प्रति अभिव्यक्ति का स्तर औसत से कम (10.67% निम्न स्तर तथा 0.67% अति निम्न स्तर) पाया गया।

मंजुला तिवारी, परमानंद बरोदिया ,नीलू सिंह एवं अनुपम चौधरी (2016), ने माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों की विज्ञान विषय के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन किया, शोधार्थी द्वारा सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया और पाया कि शहरी विद्यालय के विद्यार्थियों की विभिन्न क्षेत्रों में वैज्ञानिक अभिवृत्ति अधिक रही, तथा साथ ही साथ कुछ क्षेत्रों में ग्रामीण विद्यार्थियों में भी वैज्ञानिक अभिवृत्ति की अधिकता देखी गई, अंतिम निष्कर्ष से यह ज्ञात हुआ कि शहरी विद्यार्थियों में वैज्ञानिक अभिवृत्ति उच्च रही।

राजेंद्र कुमार गुप्ता (2017), ने कला संकाय एवं विज्ञान संकाय की सेवा पूर्व अध्यापकों के आत्म संप्रत्यय एवं शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन किया, शोधकर्ता ने अभिवृत्ति मापनी का प्रयोग किया, इसके लिए शोधकर्ता ने लिंकर्ट विधि को अपनाया। अभिवृत्ति मापने के लिए प्रश्नावली बनाने में अध्यापक गण एवं शोध निर्देशकों की सहायता ली गई थी प्रदत्त संकलन हेतु आर. के. सारस्वत द्वारा निर्मित प्रश्नावली को संशोधित कर शोधकर्ता द्वारा फरीदाबाद जिले के अंतर्गत जागृति कॉलेज आफ एजुकेशन मोहना एवं बालाजी कॉलेज आफ एजुकेशन बल्लभगढ़ के 200 सेवा पूर्व अध्यापकों को चुना एवं उनकी अभिवृत्ति का परीक्षण किया, आंकड़ों के विश्लेषण के लिए मध्यमान मानक विचलन एवं टी परीक्षण का प्रयोग किया गया, शोध परिणामों के आधार पर ज्ञात हुआ कि कला संकाय एवं विज्ञान संकाय के सेवा पूर्व अध्यापकों के आत्म संप्रत्यय एवं शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिव्यक्ति लगभग समान थी।

मुकेश कुमार सैनी (2018), ने सीनियर सेकेंडरी स्तर के विज्ञान वर्ग के सरकारी व गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति का अध्ययन विषय पर पीएचडी स्तरीय शोध अध्ययन किया, और निष्कर्ष में पाया कि, सरकारी व गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति में सार्थक अंतर पाया गया, जिसमें सरकारी विद्यालयों की तुलना में गैर सरकारी विद्यालयों में पढ़ने वाले छात्रों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति का मध्यमान उच्च पाया गया जो

दर्शाता है, कि इन विद्यार्थियों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति उच्च है।

डॉ. रेखा सोनी एवं राजेंद्र कुमार (2019), ने उच्च माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के दायित्व बोध व्यावसायिक दबाव एवं मानसिक स्वास्थ्य का तुलनात्मक अध्ययन किया, अध्ययन कार्य हेतु शोधार्थी द्वारा सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। न्यादर्श के रूप में उच्च माध्यमिक विद्यालयों के कुल 600 शिक्षकों (कला वर्ग 200 विज्ञान वर्ग 200 एवं वाणिज्य वर्ग 200) को यादृच्छिक प्रतिचयन विधि द्वारा चयनित किया गया है, एवं निष्कर्ष रूप में पाया गया है, कि कला वर्ग की महिला शिक्षकों की अपेक्षा कला वर्ग के पुरुष शिक्षकों का दायित्व बोध उच्च पाया गया, उच्च माध्यमिक स्तर के विज्ञान वर्ग के पुरुष शिक्षकों पर व्यावसायिक दबाव महिला शिक्षकों की अपेक्षा अधिक पाया गया।

सुमित कुमार (2021), ने कुरुक्षेत्र जिले के वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापकों की शिक्षक प्रभावशीलता ज्ञात करना विषय पर शोध कार्य किया यह शोध कार्य अध्यापकों की लिंग, स्थान, विषय, अनुभव, वैवाहिक स्थिति पर आधारित है। इस अध्ययन में हरियाणा राज्य के अंबाला मंडल के वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों को जनसंख्या के तौर पर लिया गया। अध्ययन में आंकड़े के संकलन के लिए डॉक्टर प्रमोद कुमार एवं डी. एन. मूंथा द्वारा निर्मित एवं प्रमापीकृत अध्यापक प्रभावशीलता मापनी 1989 का प्रयोग किया गया, आंकड़ों का विश्लेषण करने के लिए सांख्यिकीय तकनीकों जैसे माध्य प्रमाप विचलन टी परीक्षण का प्रयोग किया गया इस अध्ययन के परिणामों से पता चलता है, कि वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षक प्रभावशीलता में लिंग व वैवाहिक स्थिति के आधार पर कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया एवं शिक्षकों की प्रभावशीलता में स्थान विषय व अनुभव के आधार पर सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

डॉ हिमांशु गंगवार एवं मिथलेश गंगवार (2022), ने माध्यमिक स्तर के शिक्षकों की शैक्षिक तकनीकी के प्रयोग के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन किया, यह अध्ययन बरेली मंडल के पीलीभीत जिले के माध्यमिक स्तर के शिक्षकों पर किया गया इस अध्ययन हेतु नसरीन और फातिमा इस्लामी कि शिक्षकों की शैक्षिक तकनीकी मापनी का उपयोग किया गया अध्ययन में पाया गया कि माध्यमिक स्तर पर सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों के शिक्षकों की शैक्षिक तकनीकी के प्रयोग के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है एवं माध्यमिक स्तर के सरकारी ग्रामीण व सरकारी शहरी विद्यालयों के शिक्षकों की शैक्षिक तकनीकी के प्रयोग के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है। निष्कर्ष रूप में पाया गया कि उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी व गैर सरकारी विद्यालयों के शिक्षकों की शैक्षिक तकनीकी के प्रयोग के प्रति अभिवृत्ति का स्तर समान पाया गया।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में भावनात्मक बुद्धि का गुण विद्यमान रहता है, तथा इन दोनों का उच्च व निम्न स्तर उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पर्याप्त प्रभाव डालता है । बिना अध्ययन के विद्यार्थी के अंतर्गत वैज्ञानिक भावना उत्पन्न नहीं की जा सकती है, पहले शिक्षक को अपने अंतर्गत वैज्ञानिक भावनाओं को उत्पन्न करना होगा, तभी शिक्षक का प्रभाव छात्र के ऊपर सही ढंग से पढ़ सकता है। शिक्षा अनुसंधान द्वारा मानवीय ज्ञान में वृद्धि होती है, और विकास की क्रियाओं में सुधार तथा परिवर्तन किया जाता है। मनुष्य में विज्ञान ज्ञान की जिज्ञासा जगाता है, व्यक्ति अपनी जिज्ञासा के द्वारा विज्ञान के माध्यम से अनेक नए नए तथ्यों को जानने का प्रयास करता है। यदि शिक्षा की व्यवस्था सशक्त एवं प्रभावशाली हो तो व्यक्ति में उसके द्वारा उपरोक्त अपेक्षित परिवर्तन लाना आसान एवं संभव होगा, अन्यथा नहीं। अतः शिक्षा की प्रमुख समस्या है, कि उसकी प्रक्रिया को सुदृढ़ प्रभावशाली एवं सशक्त कैसे बनाया जाए, इस समस्या के समाधान हेतु अनुसंधान अत्यंत आवश्यक है I अनुसंधान के द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में आने वाली समस्याओं का समाधान होता है, तथा छात्रों के अधिगम को सरल और आसान बनाया जा सकता है।

निष्कर्ष

पूर्व शोध का अध्ययन करने से हमें यह पता चला कि किसी भी शिक्षक की सकारात्मक अभिवृत्ति छात्रों को अच्छा करने के लिए अभीप्रेरित करती है, जबकि शिक्षक की नकारात्मक अभिवृत्ति छात्रों को आगे बढ़ने से रोकती है । शिक्षकों की अभिवृत्ति बच्चों के प्रति नकारात्मक नहीं होनी चाहिए, क्योंकि बच्चों के ऊपर इसका गलत प्रभाव पड़ता है, जो छात्रों के शैक्षिक एवं मानसिक विकास को रोकता है, इसलिए शिक्षकों को चाहिए कि छात्रों के साथ उनकी अभिवृत्ति सकारात्मक हो, जिससे छात्रों का शैक्षिक मानसिक एवं शारीरिक विकास अवरुद्ध ना हो। पूर्व साहित्य का अवलोकन करने से यह पता चला कि विज्ञान विषय के प्रति काफी शोध कार्य हुए हैं, किंतु समाज में वैज्ञानिक दृष्टिकोण उत्पन्न करने के लिए अभी और शोध की आवश्यकता है, क्योंकि वैज्ञानिक विचारधारा के द्वारा ही समाज में

व्याप्त अंधकार एवं कुरीतियों को नष्ट किया जा सकता है।

संदर्भ

1. मुकेश कुमार सैनी (2018), सीनियर सेकेंडरी स्तर के विज्ञान वर्ग के सरकारी व गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति का अध्ययन, Journal of Educational & Psychological Research, Jan 2018, Vol.8 No.1, Page No.129-132.
2. डॉ हिमांशु गंगवार एवं मिथलेश गंगवार (2022), माध्यमिक स्तर के शिक्षकों की शैक्षिक तकनीकी के प्रयोग के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन, International Journal of Creative Research Thoughts, Sep 2022, Vol.10,Issue 9, Page No. 682-685.
3. डॉ. रेखा सोनी एवं राजेंद्र कुमार (2019) उच्च माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के दायित्व बोध व्यावसायिक दबाव एवं मानसिक स्वास्थ्य का तुलनात्मक अध्ययन, शोध मंथन, July- Sept. 2019, Vol. X, No. III, UGC No.40908, Page No.898-907.
4. सुमित कुमार (2021), कुरुक्षेत्र जिले के वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापकों की शिक्षक प्रभावशीलता ज्ञात करना, Journal of Emerging Technologies and Innovative Research, Oct.2021, Vol. 8, Issue 10, Page No. 402-408.
5. राजेंद्र कुमार गुप्ता (2017), कला संकाय एवं विज्ञान संकाय की सेवा पूर्व अध्यापकों के आत्म संप्रत्यय एवं शिक्षण व्यवसाय के व्रत अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन, Asian Journal of Educational Research & Technology, April-2017, Vol. 7(2), Page No. 32-37.
6. https://www.shikshavichar.com/2019/05/Vigyaan-Shikshan-ke-Uddeshya-in-hindi.html
7. अरमान अली (2020), माध्यमिक स्तर के शिक्षकों की शैक्षिक अभिवृत्ति का अध्ययन, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language, Aug-Sept.-2020,Vol. 8/41, Page No. 10542-10555.
8. प्रोफेसर रीना जैन एवं प्रीति जैन (2015), विद्यालय शिक्षकों एवं शिक्षक प्रशिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति व्यावसायिक प्रतिबद्धता एवं व्यावसायिक मूल्यों का अध्ययन, AIJRA, 2015,Vol.VI, Issue I, Page No. 11.1-11.6.
9. मंजुला तिवारी, परमानंद बरोदिया ,नीलू सिंह एवं अनुपम चौधरी (2016), माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों की विज्ञान विषय के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन, Worldwide Journal of Multidisciplinary Research and Development, 2016, Vol. 2(2), Page No. 44-48.
10. प्रतिभा गुप्ता एवं उदय सिंह (2022), शिक्षकों की अभिवृत्ति का विद्यार्थियों के शैक्षिक विकास पर प्रभाव का अध्ययन, Scholarly Research Journal for Interdisciplilary Studies, March-April 2022, Vol. 9/70, Page No. 16829-16834.
11. डॉ श्रीमती मीनाक्षी भटनागर श्रीमती किरण परगांई (2018), International Journal of Research, March 2018, Vol. 5, Issue 5, Page No.-382-406.